सुरेश चन्द्र सर्वहारा

पेड़

रहे झूमते पेड़ खुशी से
सारी सारी रात,
उन्हें देर तक रही नहाती
रुक रुक कर बरसात।
तेज हवा के झोंकों में वे
लहरा अपने पात,
लगता जैसे आसमान से
करते कोई बात।
झकझोरे खाती शाखों से
थिरक रहा है गात,
पेड़ झुके तो टला शीश से
भीषण झंझावात।
धूप खिली तो हँसे पेड़ भी
ज्यों निश्छल नवजात,
पेड़ हमें देते हैं सुख की
जीवन में सौगात।